P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जलवायु परिवर्तन, वर्तमान स्थिति और गांधीवाद

रजनी तसीवाल
सह आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
टोंक, राजस्थान

सारांश

परि और आवरण शब्दों की संधि करने पर पर्यावरण शब्द बनता है जिसका शाब्दिक अर्थ है जो चारों ओर से ढ़के हुये है। हम समस्त जीवधारियों और वनस्पतियों के चारों ओर जो आवरण है उसे पर्यावरण कहते है। पर्यावरण एक भौतिक और जैविक संकल्पना है। अतः इसमें पृथवी के दोनों अर्थात अजीवित और जीवित संघटकों को सम्मिलित किया जाता है। पर्यावरण की इस आधारभूत संरचना के आधार पर इसको दो प्रमुख भौतिक पर्यावरण और जैविक पर्यावरण में विभक्त किया जाता है। भौतिक पर्यावरण पुनः तीन भागों स्थलमण्डलीय, वायुमण्डलीय, जलमण्डलीय में विभाजित किया जाता है। मनुष्य की प्राकृतिक पर्यावरण के साथ दोहरी भूमिका होती है। मनुष्य एक तरफ तो भौतिक पर्यावरण के जैविक संघटक का एक महत्वपूर्ण भाग या घटक है तो दूसरी तरफ वह पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण कारक भी है। मनुष्य प्राकृतिक पर्यावरण तंत्र को विभिन्न रूपों में प्रभावित करता है। यथा जीवित या भौतिक मनुष्य के रूप में, सामाजिक मनुष्य के रूप में, आर्थिक मनुष्य के रूप में तथा प्रौद्योगिक मानव के रूप में। औद्योगिक क्रांति जो लगभग ढ़ाई सौ साल पहले शुरू हुई, मानव गतिविधि के प्रभाव से पृथ्वी गृह पर उल्लेखनीय परिवर्तन हुए। मानवीय गतिविधियों में वृद्धि ने पर्यावरण विचलन की ओर अग्रसर किया हैं मानव जनित उत्सर्जन (कार्बन–डाइ– ऑक्साइड), मीथेन, नाइट्रस, ऑक्साइड और कई औद्योगिक गैसों से पृथ्वी की जलवायु बदल रही है। हमारे आस–पास के वातावरण और महासागरों में गर्माहट आई है। बर्फ, परमाफ्रोस्ट और ग्लोशिर ध्रुवीय और अधिक कम हो गये है। समुंद्र का स्तर पहले से बढ़ा है। महासागर और अधिक अम्लीय हो गये है। कई चरम मौसमी घटनाये तेज हो गयी है। जलवायु परिवर्तन के परिणाम स्वरूप विशेष रूप से भारत, बांग्लादेश, मालदीव, श्रीलंका और दक्षिण एशिया के अन्य देशों में विकास के लिए चुनौतियॉ तेज होगी। आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों से उत्पन्न होने वाले प्राकृतिक खतरों और कमजोरियों के कारण मानव अत्यधिक आंशका में जीने लगा है। जलवायु परिवर्तन, तेजी से समुंन्द्र का स्तर बढ़ना, चक्रवाती गतिविधि और तापमान में परिवर्तन, वृष्टिपात ये सभी कारक मनुष्य, समाज, देश और भारतीय उपमहाद्वीप को प्रभावित कर रहा है। गांधी जी ने इस पर्यावरण की विकराल समस्या को कई वर्षों पूर्व अनुमानित कर लिया था। इसलिए वे औद्योगिकीकरण और यंत्रों के अनियत्रित विकास के विरूद्ध थे। गांधी जी विकसित यंत्रों पर आधारित औद्योगिक व्यवस्था को मानवता के सम्मुख उपस्थित समस्याओं का मूलभूत कारण मानते थे। उनका मानना था कि मशीन पर मनुष्य की निर्भरता बढ़ती ही गई तो एक दिन मशीनें मनुष्य को नियंत्रित करेगी और यह अवस्था मानवीय सभ्यता के पतन का प्रतीक होगी।

प्रश्न यह है कि क्या जलवायु परिवर्तन पर प्रतिक्रिया अनुकूलन और शमन दोनों माध्यम से की जानी चाहिए ? क्या वास्तव में औद्योगिकीकरण ही एक मात्र जलवायु परिवर्तन का मूलभूत कारण है ? क्या गांधीवादी विकास का मॉडल, चरखा अर्थशास्त्र इस जलवायु परिवर्तन को रोकने में सहायक हो सकता है ? शोध–पत्र इसी अध्ययन पर आधारित है।

मुख्य शब्द : जलवायु, पर्यावरण, वर्तमान स्थिति, गाँधीवाद, गतिविधियाँ।

प्रस्तावना

आज का युग संचार व प्रौद्योगिकी का युग है। जो औद्योगिक क्रांति ढ़ाई सौ साल पहले शुरू हुई उससे मानव की गतिविधियों से पृथ्वी पर उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इन गतिविधियों के परिणामस्वरूप कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए है।

परि और आवरण शब्दों की संधि करने पर पर्यावरण शब्द बनता है जिसका शाब्दिक अर्थ है जो चारों ओर से ढ़के हुये है। हम समस्त जीवधारियों और वनस्पतियों के चारों ओर जो आवरण है उसे पर्यावरण कहते है।

सामान्यतयाः पर्यावरण की ''प्रकृति'' से समता या तुलना की जाती है जिसके अन्तर्गत गृहीय पृथ्वी के भौतिक घटकों (स्थल, वायु, जल) आदि को सम्मिलित किया जाता है। ये सभी घटक सभी जीवों को आधार प्रदान करते है एवं उन्हें आश्रय देते है, उनके विकास तथा सम्वर्द्धन हेतु आवश्यक दशायें प्रस्तुत करते है। ये सभी घटक जीवधारियों के जीवन को प्रभावित करते है।

पर्यावरण एक अविभाज्य समष्टि है तथा भौतिक, जैविक एवं सांस्कृतिक तत्वों वाले पारस्परिक क्रियाशील तंत्रों से इसकी रचना होती है। ये सभी तंत्र अलग–अलग तथा सामूहिक रूप से विभिन्न रूपों में परस्पर सम्बद्ध होते है। भौतिक तत्व (स्थलरूप, जलीय भाग, वायु, मृदा, शैल तथा खनिज) मानव निवासस्य क्षैत्र की परिवर्तनशील विशेषताओं, उसके सुअवसरों तथा प्रतिबंधक अवस्थितियों को निश्चित करते है।

जैविक तत्व (पौधें, जन्तु, सूक्ष्म जीव तथा मानव) जीवमण्डल की रचना करते है। सांस्कृतिक तत्व (आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक) मुख्यतया मानव निर्मित होते है तथा सांस्कृतिक पर्यावरण की रचना करते है

पर्यावरण भौतिक एवं जैविक संकल्पना है[1]

पर्यावरण में पृथ्वी के दोनो अर्थात् अजीवित तथा जीवित संघटकों को शामिल किया जाता है। पर्यावरण को इसकी आधारभूत संरचना के आधार पर दो प्रमुख प्रकारों में विभक्त किया जाता है।

(अ) भौतिक पर्यावरण
(ब) जैविक पर्यावरण

भौतिक पर्यावरण तीन प्रकार के होते हैः–

(1) स्थलमण्डलीय पर्यावरण
(2) वायुमण्डलीय पर्यावरण
(3) जलमण्डलीय पर्यावरण

स्थलमण्डलीय पर्यावरण, वायुमण्डलीय पर्यावरण व जलमण्डलीय पर्यावरण को पर्वत पर्यावरण, पठार पर्यावरण, मैदान पर्यावरण, झील पर्यावरण, सरिता पर्यावरण, हिमनद पर्यावरण, मरूस्थल पर्यावरण, सागर तटीय पर्यावरण, सागरीय पर्यावरण में विभाजित किया जाता है।

जैविक पर्यावरण

जैविक पर्यावरण की संरचना मानव सहित जन्तुओं द्वारा होती है। इनमें मनुष्य एक महत्वपूर्ण कारक होता है। जैविक पर्यावरण को भी दो भागों में विभक्त किया जाता हैः–

(1) वानस्पतिक पर्यावरण (2) जन्तु पर्यावरण

सभी जीवधारी लगभग अपने विभिन्न स्तरीय सामाजिक समूह तथा संगठन की रचना हेतु कार्य करते है। इस प्रकार सामाजिक पर्यावरण का आर्विभाव होता है। सामाजिक पर्यावरण के अन्तर्गत सभी जीवधारी अपने जीवन निर्वाह, अस्तित्व तथा सम्वर्द्धन के लिये भौतिक पर्यावरण से पदार्थो को प्राप्त करने के लिए भौतिक पर्यावरण से पदार्थों के प्राप्त करने की प्रक्रिया द्वारा आर्थिक पर्यावरण का निर्माण करते है।

मनुष्य समस्त जीवधारियों में सर्वाधिक बुद्धिमान तथा सभ्य प्राणी है। मनुष्य के 3 पक्षों यथा–भौतिक, सामाजिक तथा आर्थिक के जैविक पर्यावरण में अपनी विभिन्न विशेषतायें, भूमिकायें और कार्य होते है।

पर्यावरण के संघटक

पर्यावरण के घटकों को 3 प्रमुख प्रकारों में विभक्त किया जाता हैः–

(1) भौतिक या अजैविक संघटक
(2) जैविक संघटक
(3) ऊर्जा संघटक

भौतिक संघटक में स्थल, वायु तथा जल एवं उनके उपसंघटकों को सम्मिलित किया जाता है।

जैविक संघटक के अन्तर्गत पादप संघटक, मनुष्य सहित जन्तु संघटक तथा सूक्ष्म जीव घटक सम्मिलित है।

ऊर्जा संघटक में सौर्यिक ऊर्जा एवं भूतापीय ऊर्जा को सम्मिलित किया जाता है।

औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप मानवीय गतिविधियों में वृद्धि ने पर्यावरण को विचलन की और अग्रसर किया है। जिसमें प्रकृति के अन्तर्गत होने वाले जलवायु परिवर्तन के औसत मौसमी दशाओं में ऐतिहासिक रूप से होने वाले परिवर्तन को हम जलवायु परिवर्तन कहते है।[2]

यह जलवायु परिवर्तन आज प्राकृतिक व राजनीतिक मानव क्रियाओं का परिणाम है।

जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन हरित गृह प्रभाव और वैश्विक माना जा रहा है। वर्तमान युग में मानव द्वारा नई–नई तकनीकों से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करके उन सभी प्राकृतिक संसाधनों की मात्रा को सीमित कर दिया गया है। प्राकृतिक संसाधनों की मात्रा में कमी के कारण ओजोन परत को क्षति पहुँच रही है। इस क्षति के कारण मनुष्य का रहन–सहन खान–पान में भी बदलाव होने लगा है। जलवायु का निर्माण करने में वायुमण्डलीय घटकों का सबसे बड़ा योगदान होता है। इसी जलवायु के निर्माण में वर्षा, सूर्य, प्रकाश, हवा, नमी व तापमान प्रमुख है। इसी जलवायु में समस्त मौसमी घटनाये घटती है। जलवायु की उपस्थिती व वायुमण्डल में होने वाली घटनाओं के परिणामस्वरूप ही हम गर्मी के मौसम में गर्मी व सर्दी के मौसम में सर्दी का अनुभव करते है। किन्तु पिछले कुछ वर्षों में यह देखा गया है कि जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम में बदलाव आने में काफी समय लगता है। इसलिए यह यदि दिखाई कम देता है।

जलवायु परिवर्तन–कारण

वर्तमान में जलवायु परिवर्तन के कई कारणों को माना जा सकता है जिसमें मुख्य रूप से दो कारण सर्वोपरि है–

प्राकृतिक कारण–महाद्वीपों का खिसकना, ज्वालामुखी का फटना, पृथ्वी का झुकाव होना, समुंद्री तंरगे ऊंची होना, मानव जनित उत्सर्जन (कार्बन–डाई ऑक्साइड), मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड और औद्योगिक गैसों का अधिक उत्सर्जन, इन सभी गैसों की मात्रा में वृद्धि के कारण वातावरण व महासागरों में गर्माहट आई है।

बर्फ, परमाफ्रोस्ट और ग्लेशियन ध्रुवीय और अन्यत्र कम हो गये है। समुद्रों का स्तर बढ़ा है और अवशोषण किये जाने (लगातार खनिज खनन, तेल खनन, मृदा कटाव) के कारण महासागर अधिक अम्लीय हो गये है।

जलवायु परिवर्तन के द्वितीय कारण में मानवीय गतिविधियॉ अत्यधिक जिम्मेदार है। इन गतिविधियों में ग्रीन हाऊस प्रभाव में वृद्धि का होना, जंगलों में खत्म करना, कल कारखानों में वृद्धि, हरित क्रांति का नकारात्मक प्रभाव एवं वैश्वीकरण शामिल है।

मानव पर्यावरण सम्बन्ध व जलवायु परिवर्तन

मनुष्य की प्राकृतिक पर्यावरण के साथ दो तरफा भूमिका होती है। अर्थात् मनुष्य एक तरफ तो भौतिक पर्यावरण के जैविक संघटक का एक महत्वपूर्ण भाग तथा घटक है तो दूसरी तरफ वह पर्यावरण का महत्वपूर्ण कारक भी है। इस तरह मनुष्य प्राकृतिक पर्यावरण तंत्र को विभिन्न हैसियत से विभिन्न रूपों में प्रभावित करता हैः–

यथा– ''जीवित या भौतिक मनुष्य के रूप में (यहां मनुष्य पर्यावरण के एक घटक के रूप में जीवन व्यतीत करता है।)''

''आर्थिक मनुष्य'' के रूप में (यहां मनुष्य पर्यावरण में रहते हुए क्रय, विक्रय, व्यापार, पर्यावरण के संसाधनों का लेन–देन करता है)''

प्रौद्योगिक मानव औद्योगिकीकरण के साथ अधिकतम विकास पर बल देता है। मनुष्य के सभी प्राकृतिक गुण–जन्म, वृद्धि, स्वास्थ्य, मृत्यु आदि प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा उसी तरह प्रभावित तथा नियंत्रित होते है जैसे कि पर्यावरण के अन्य जीवों के प्राकृतिक गुण प्रभावित एवं नियंत्रित होते है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि मानव अन्य प्राणियों की तुलना में शारीरिक एवं मानसिक स्तरों तथा प्रौद्योगिक स्तर पर सर्वाधिक विकसित प्राणी है। मानव प्राकृतिक पर्यावरण को बडे स्तर पर परिवर्तित करके अपने अनुकूल बनाने में समर्थ है।

प्रारम्भ में आदिमानव की भौतिक पर्यावरण की कार्यात्मकता में भूमिका पाता और दाता की थी। ;त्मबमपअमत – ब्वदजतपइनजवतद्ध
मनुष्य भौतिक पर्यावरण सं अन्य जीवों के समान संसाधन (फल–फूल, पशु, मांस) प्राप्त करता था। इस अवस्था में वह पाता की भूमिका में था। दूसरी ओर पर्यावरणीय संसाधनों में भी अपना योगदान करता था। मनुष्य अनजाने में फलों के बीजों को बिखेर देता था। इन बीजों से नये पौधें का निर्माण होता था। इस तरह मानव संस्कृति के विकास के प्रथम चरण में मनुष्य भौतिक पर्यावरण का अन्य कारकों के समान एक कारक मात्र था।

समय परिवर्तनशील है और मनुष्य अन्य प्राणियों की तुलना में शारीरिक एवं मानसिंक व प्रौद्योगिकी स्तर पर भी सर्वाधिक विकसित प्राणी है। समाज तथा उसकी संस्कृति के विकास के साथ उसकी बुद्धि, उसका कौशल तथा उसकी प्रौद्योगिकी विकसित होती गयी। पर्यावरण के साथ उसकी भूमिका तथा संबंध भी उत्तरोतर परिवर्तित होते गये।

पर्यावरणीय कारकः–पर्यावरण का परिवर्तनकर्ता–पर्यावरण का विध्वंसकर्ता

जो मानव प्रारम्भ में प्रकृति का अंग तथा साझीदार था वहीं आगे चलकर उसका स्वामी बन गया। मानव एवं पर्यावरण के मध्य सहभागिता तथा परस्परावलम्बन का संबंध चरमरा गया, और मानव प्राकृतिक पर्यावरण का कारक एवं पालक न होकर विध्वंशक हो गया।[3]

मानव पर्यावरण के मध्य संबंध		
काल	**मानव स्वरूप**	**मानव पर्यावरण संबंध**
आखेट एवं भोजन संग्रहक	जीवित या भौतिक मनुष्य	कारक
पशुपालन एवं पशुचारण	सामाजिक मनुष्य	रूपान्तरकर्ता
पौधपालन एवं कृषि	आर्थिक मनुष्य	परिवर्तनकर्ता
विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं औद्योगिकीकरण	प्रौद्योगिक मानव	विध्वंशकर्ता

जलवायु परिवर्तन के कारण एवं परिणाम

प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान समय तक मानव पर्यावरण के मध्य संबंध लगभग चार भागों में विभाजित रहे है [5]

(1) आखेट एवं भोजन संग्रहकाल
(2) पशुपालन एवं पशुचारण संग्रहकाल
(3) पौधपालन एवं कृषिकाल
(4) विज्ञान, प्रौद्योगिकी और औद्योगिकीकरण

प्रथम चरण में मानव प्राकृतिक पर्यावरण का अभिन्न भाग तथा घटक था। मानव के कार्य पर्यावरण के अन्य प्राणियों के समान थे। आदिमानव और पर्यावरण के बीच मधुर और मित्रवत संबंध थे। इस समय मनुष्य पाता और दाता दोनो था। पशुपालन का ज्ञान मनुष्य को धीरे–धीरे हुआ। पशुओं की सुरक्षा ने जनसमुदाय का एक साथ रहना अनिवार्य कर दिया होगा। समय के साथ पशुओं और मनुष्यों की संख्या में वृद्धि होती गयी। यद्यपि पर्यावरण के प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग भी बढ़ता गया लेकिन इसका प्राकृतिक पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा था।

पौधों का भोजन के लिए पालन मनुष्य द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण के जैविक घटकों पर विजय हासिल करने का महत्वपूर्ण प्रयास था। पौधों के पालन के माध्यम से प्राचीन कृषि का विकास हुआ और स्थायी जीवन व्यतीत करने की शुरूआत हुई।

खाद्यान्न फसलों की कृषि के साथ सामाजिक वर्गों तथा संगठनों का अविर्भाव हुआ जिस कारण प्रारम्भिक प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं–यथा नील घाटी या मिश्र घाटी की सभ्यता, सिन्धुघाटी की सभ्यता आदि का अभ्युदय हुआ।

संघठित मानव समुदाय एवं मानव समाज, मानव सभ्यता तथा कृषि कार्य के अभ्युदय ने मनुष्य तथा प्राकृतिक पर्यावरण के मध्य अब तक चले आ रहे मित्रवत तथा मधुर संबंधों को परिवर्तित कर दिया।

स्थानान्तरण कृषिः– कृषि रूपों तथा कृषि–कार्यों में निरन्तर सुधार, परिमार्जन तथा प्रगति के फलस्वरूप मानव जनसंख्या में भी निरन्तर वृद्धि होती गयी। परिणामस्वरूप अधिकाधिक वनों को साफ करके कृषि भूमि में परिवर्तित किये जाने लगा।

स्थानान्तरण कृषि ने वनों का सर्वाधिक विनाश किया है

कालान्तर में मानव ने नई प्रौद्योगिकी का विकास किया तथा अपने एक निजी पर्यावरण का निर्माण किया। मानव के इस स्वनिर्मित निजी पर्यावरण को ''सांस्कृतिक पर्यावरण'' कहते है।

भवनों, गांवों, कस्बों, नगरों, सामाजिक संस्थानों (विद्यालय), पुजाघर यातायात के लिए सड़के, पुल रेल, नहरों आदि का निर्माण इसी सांस्कृतिक पर्यावरण के अन्तर्गत किये गये थे।

सांस्कृतिक पर्यावरण का निर्माण कृषि विकास के विभिन्न चरणों एवं अवस्थाओं में संभव हुआ था। इसी प्रकार के सांस्कृतिक पर्यावरण का निर्माण, विकास और सम्बर्द्धन प्रौद्योगिकी में विकास के कारण संभव हुआ। इस तथ्य को सहज स्वीकार किया जा सकता है कि प्रौद्योगिकी ने ''भौतिक मानव और सामाजिक मानव को'' ''आर्थिक मानव'' में बदल दिया। लगभग 1860 तक विकसित प्रौद्योगिकी विनाशक एवं संहारक नहीं थी। वह मानव के आर्थिक विकास में इस तरह सहायक थी कि उसका प्राकृतिक पर्यावरण पर अधिक कुप्रभाव नहीं था। इस समय तक मनुष्य अपनी बुद्धिमता के बल पर प्राकृतिक संसाधनों को अपने अनुकूल बनाने में समर्थ हो गया था। किन्तु प्रकृति अब भी सर्वोपरि थी।

समय में परिवर्तन होने के साथ–साथ मनुष्य की आवश्यकता और कार्य करने प्रणाली में भी परिवर्तन होता है।

विज्ञान एवं अत्यधिक विकसित, परिमार्जित एवं दक्ष प्रौद्योगिकी के प्रार्दुभाव के साथ उन्नीसवी सदी के उतरार्द्ध में औद्योगिक क्रांति का सवेरा (1860 से) होता है। औद्योगिकीकरण के साथ मनुष्य तथा पर्यावरण के मध्य शत्रुतापूर्ण संबंध की शुरूआत भी होती है।

''आर्थिक निश्चयवाद'' की अतिवादी संकल्पना का जन्म हो चुका था।

जलवायु परिवर्तन के कारण

1. भूमि उपयोग में परिवर्तन
2. निर्माण तथा उत्खनन कार्य
3. मौसम रूपान्तरण कार्यक्रम
4. वन क्षैत्रों की संख्या में कमी
5. नाभिकीय कार्यक्रम
6. हरित क्रांति व रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग
7. कार्बनडाई ऑक्साइड उत्सर्जन में वृद्धि
8. ग्रीन हाऊस गैस उत्सर्जन
9. वैश्वीकरण और प्राकृतिक सम्पदा का शोषण

विकास के लगातार क्रम में मनुष्य ने जब पौधों को भोजन के लिए पालना प्रारम्भ किया तो पौधों के पालन के माध्यम से प्राचीन कृषि का विकास हुआ। कृषि के विकास के साथ ही स्थायी जीवन व्यतीत करने का प्रारम्भ हुआ।

कृषि के प्रारम्भ के साथ ही कृषि रूपों तथा कृषि कार्यों में निरन्तर सुधार, परिमार्जन तथा प्रगति के फलस्वरूप मानव जनसंख्या में भी निरन्तर वृद्धि होती गयी। अधिकाधिक वनों को काटकर कृषि भूमि में परिवर्तित किया जाने लगा। स्थानान्तरण कृषि द्वारा वनों का सर्वाधिक विनाश होने लगा।

स्थानान्तरण कृषि प्रणाली में वनों को जलाकर भूमि को साफ करके कृषि के उपयोग में लाया जाता है। लगभग 4–5 वर्ष तक भूमि की उर्वरता कायम रहती है फिर उस क्षेत्र को छोड़ दिया जाता है। पुनः अन्यत्र वन को जलाकर कृषि भूमि प्राप्त की जाती है।

निर्माण एवं उत्खनन कार्य के माध्यम से मनुष्य ''सांस्कृतिक पर्यावरण'' का निर्माण करने लगता है। इस सांस्कृतिक पर्यावरण में नदी पर बांध का निर्माण, जलभण्डारों का निर्माण सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण, नदी जलधाराओं में विपथगमन, नदी की जलधाराओं में हस्तक्षेप, बाढ़ से रक्षा हेतु तटबंधों तथा डाइक का निर्माण, नगरीकरण में वृद्धि तथा विस्तार, खनिजों का खनन, खनिज तेल का बेधन, भूमिगत जल का निष्कासन होता है। मनुष्य बुद्धिजीवी है। वहीं मनुष्य प्रकृति को जब अपने हाथों की कठपूतली समझने लगता है तो जलवायु के सभी घटकों का चक्र प्रभावित हो जाता है।

मनुष्य वर्षण को प्रेरित करने के लिए मेघबीजन की प्रणाली का सहारा लेने लगा है। उपल वृष्टि में वृद्धि हो चुकी है। इन सब कार्यों से जलवायु में स्वाभाविक परिवर्तन आ चुका है।

नाभिकीय कार्यक्रम ने भी जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा दिया है।

ग्रीन हाऊस गैस उत्सर्जन करने वाले राष्ट्र

ग्रीन हाऊस गैस उत्सर्जन करने वाले 10 राष्ट्र		प्रतिव्यक्ति हाऊस गैस उत्सर्जन करने वाले शीर्ष 10 राष्ट	
राष्ट्र	कुल उत्सर्जन : में	राष्ट्र	प्रतिव्यक्ति उत्सर्जन वन में
चीन	25.26	यूएस	19.86
यूएस	14.4	रूस	16.22
यूरोपीय संघ	10.16	जापान	10.54
भारत	6.96	ईरान	9.36
रूस	5.36	यूरोपीय संघ	8.77
जापान	3.11	चीन	8.13
ब्राजील	2.34	मैक्सिको	5.99

इण्डोनेशिया	1.76	ब्राजील	5.10
मैक्सिको	1.67	इण्डोनेशिया	3.08
ईरान	1.65	भारत	2.44

वन क्षेत्रों की संख्या में कमी

संयुक्त राष्ट्र (यू.एन.) की रिपोर्ट के अनुसार पिछले 25 वर्षों में भारत में वन क्षेत्र सबसे तेज रफ्तार से कम हुए है। इस अवधि में दुनिया भर में दक्षिण अफ्रीका के क्षेत्रफल जितना वन क्षेत्र समाप्त हो चुका।

यू.एन. के ''वैश्विक वन संसाधन आकलन 2015'' रिपोर्ट पेश [7] किया था। इसके अनुसार वन क्षेत्र में कमी की दर में गिरावट आई है। लेकिन ढाई दशक में पर्याप्त मात्रा में वनोंका क्षरण भी हो चुका है। वर्ष 1990 से 2015 तक दुनिया भर में जंगल का दायरा तीन फीसदी सिमट चुका है। आंकड़ों के अनुसार जंगल का क्षेत्र दस अरब एकड़ से घटकर 9.88 अरब एकड़ तक पहुंच चुका है। इसका अर्थ यह है कि 31.9 करोड़ एकड़ भूमि से वन समाप्त हो चुके है। प्राकृतिक वन क्षेत्र 6 फीसदी तक कम हुए है। जलवायु परिवर्तन का सबसे ज्यादा असर वर्षा आधारित वनों पर पड़ा है तथा वनों की संख्या में लगातार कमी से पृथ्वी के तापमान में वृद्धि हुई है। वैज्ञानिक और पर्यावरण विद् जलवायु संकट के दिनोंदिन और गहराये जाने की चेतावनी दे रहे है।

हरित क्रांति

''एक छोटीसी अवधि में कृषि उत्पादन में अच्छी तरह से विद्धित सुधार और समय के एक काफी लंबी अवधि में कृषि उत्पादन के एक उच्च स्तर की जीविका''[8] हरित क्रांति ने पर्यावरण, जलवायु और समाज तीनो को प्रभावित किया है। रासायनिक उर्वरकों और सिंथेटिक और कीटनाशकों के उपयोग में नाटकीय रूप से प्रदूषण और कटाव में वृद्धि से पर्यावरण एवं जलवायु दोनो प्रभावित हुए है।

हरित क्रांति के परिणामस्वरूप मिट्ठी और पौधों के लिए खाद सामग्री खेतों में चारों ओर डाली जाती है। रासायनिक उर्वरक और सिंथेटिक व कीटनाशकों के डाले जाने के कारण पर्यावरण ने प्रदूषण भी बढ़ा। मिट्टी के प्रदूषण में लगातार वृद्धि हुई। इस मिट्ठी के प्रदूषण के कारण मिट्ठी की उपरी परत के कटाव का खतरा बढ़ा हैं जो मिट्टी की गुणवता मेंकमी का कारण बना है। जलवायु परिवर्तन इस दौर की निर्धारित चुनौतियों में से एक है। काई भी मनुष्य जलवायु परिवर्तन को समझे बिना ना तो प्रबंधन कर सकता है और ना ही व्यवसाय कर सकता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की पहल पर ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने के लिये 1992 में ''यूनाईटेड नेशंस फ्रेमवर्क कन्वेंशन और क्लामेट चेंज (UNFCCC) अस्तित्व में आया।[9]

ग्लोबल वार्मिंग के लिए उत्तरदायी गैस

गैसे	औद्योगिकीकरण से पूर्व की सांद्रता	वर्तमान सांद्रता	अस्तित्व अवधि
कार्बनडाई ऑक्साईड	280	379	50-200
मिथेन	700	1750	15-15
नाइट्रस ऑक्साइड	275	316	120
हाइड्रो फ्लोरो कार्बन्स	0	0.1	100
पर फ्लोरो कार्बन्स	0	0.1	50,000
सल्फर हेक्साफ्लोराइड	0	0.03	3200

कार्बनडाई ऑक्साइड को पार्ट्स पर मिलियन एवं अन्य गैसों को पार्ट्स पर विलियन में प्रदर्शित किया गया है।

वैश्वीकरण विश्व के एकीकरण की व्याख्या करता है। वैश्वीकरण विश्व को एक सूत्र में पिरोता है। आज का युग वैश्वीकरण का युग है। वैश्वीकरण ने विश्व के तमाम देशों को एक कर दिया है, इसके द्वारा एक देश दूसरे देश से सम्पर्क में आ गया है।

कॉमकेन एवं यंग के अनुसार ''वैश्वीकरण राष्ट्रों की राजनीतिक सीमाओं के आर–पार आर्थिक लेन–देन की प्रक्रियाओं और उनके प्रबंधन का प्रवाद्ध है। सम्पूर्ण विश्व के देश एक दूसरे से आर्थिक समझौता कर वैश्विक स्तर पर व्यापार करते है। इस प्रकार की व्यवस्था से विश्व स्तर पर एक प्रक्रिया निर्धारित होती है और आवश्यकतानुसार संसाधनों का हस्तान्तरण होता है। यह प्रक्रिया केवल संसाधनों के आदान–प्रदान तक सीमित ना होकर प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी हस्तान्तरण, सूचनाओं का हस्तान्तरण, ज्ञान एवं विज्ञान का हस्तान्तरण तथा सांस्कृतिक क्षैत्रों में भी होता है।''[10]

वैश्वीकरण के माध्यम से औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि, कृषि क्षेत्र का विस्तार, संचार सुविधाओं का विकास एवं सूचनाओं का आदान प्रदान हुआ है लेकिन वैश्वीकरण से सबसे अधिक प्राकृतिक सम्पदा का शोषण एवं पर्यावरण का विनाश हुआ है। आज के मशीनी युग में हम ऐसी स्थिति से गुजर रहे है। जलवायु परिवर्तन एक गम्भीर चुनौती बनकर हमारे सम्मुख खडा है। भारत की राजधानी दिल्ली विश्व के अन्य शहरों की भांति प्रदूषण में प्रमुखता से गिनी जाने लगी है।

जलवायु परिवर्तन गांधीवादी दृष्टिकोण (प्रासंगिकता)

मनुष्य समाज ही नहीं, पूरी सृष्टि के साथ मनुष्य का वैसा ही रिश्ता है जैसा मनुष्य और समाज का। चारों ओर फैली हुई इस विशाल सृष्टि में हर चीज अलग–अलग दिखते हुए भी वास्तव में एक दूसरे से संबंधित है तथा किसी न किसी रूप में परस्पर अवलंबित

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

है। दृश्यमान विविधता की तह में एक विलक्षण प्रकार की एकता हम सब को दिखाई देती है।

गांधीजी का दृष्टिकोण जलवायु के प्रति सकारात्मक था

उनके अनुसार ''ईश्वर सब में व्याप्त है वह सर्वव्यापी है।''[11] इस समस्त सृष्टि के कण–कण में जर्रे–जर्रे में उसका आवास है। गांधीजी की इस धारणा में अध्यात्म का प्रतिपादन रहा है। किन्तु वर्तमान का मनुष्य और भौतिक विज्ञान, यह मानने लगे है कि सब पदार्थों या वस्तुओं में एक सर्वमान्य तत्व है, वे उसे ऊर्जा (एनर्जी) कहते है।

सब के लिए एक और एक के लिए सबः–

मनुष्य यह समझता है कि यह सारी सृष्टि मेरे लिए बनी है। एकमात्र मैं इसका उपभोक्ता हूँ। यद्यपि अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य में कुछ विशेषतायें है। इन विशेषताओं के कारण ही मनुष्य यह समझता है कि वह सृष्टि की अन्य सब वस्तुओं तथा प्राणियों पर अपना प्रभुत्व जमा सकता है और उनका मनमाना उपयोग कर सकता है।

''गॉड क्रियेटेड मैन इन हिज ओन ईमेज''

इस वाक्य का अर्थ यह लगाया जाता है कि मनुष्य ''ईश्वर'' के समान है इसलिए वह इस पृथ्वी की अन्य वस्तुओं और प्राणियों का ''मालिक'' है। उन सब पर उसका अधिकार है जबकि इस वाक्य का सही अर्थ तो यह होना चाहिये कि ईश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया है तो ईश्वर की तरह वह सबका पालनकर्ता और रक्षक है।

गांधीजी मानते थे कि मनुष्य न तो अन्य प्राणियों से या वस्तुओं से अलग है। ना ही वह उन सब वस्तुओं का मालिक है।[10]

ना ही मनुष्य को किसी भी वस्तु का मनमाना उपयोग करने का अधिकार है। मनुष्य उसी प्रकार सृष्टि का एक अंग है जिस प्रकार अन्य जड़–चेतन तत्य है।

गांधीजी का मानना था कि जब मनुष्य दूसरे प्राणियों या वस्तुओं की तरह ही प्रकृति का एक अंग है तब उसे किसी भी वस्तु का दुरूपयोग करने या उसके अमर्यादित भोग का अधिकार नहीं हो सकता है।

सिद्धांत

1. व्यक्ति और समाज के हित परस्पर निरोधी नहीं है एक है।
2. सृष्टि की हर चीज एक दूसरे से संबंधित है तथा परस्पर अवलंबित है। अनेकता या विविधता में एकता यह सृष्टि की विशेषता है।
3. ''मैं सृष्टि का उपभोक्ता हूँ और सृष्टि मेरी उपभोग्य है'' यह धारणा गलत है।
4. सृष्टि नियम से चलती है, उसमें स्वच्छन्दत्ता को स्थान नहीं है, इन नियमों की अवहेलना पर प्रकृति उसकी सजा देती है और इस अवहेलना से ही समाज में समस्यायें पैदा होती है।
5. सृष्टि में रचना, दुख या कष्ट के लिए नहीं आनन्द के लिए होती है। प्रकृति में सबके भरण पोषण और विकास के लिए पर्याप्त सुविधा है बशर्त कि मनुष्य प्रकृति के नियमों को समझकर उनके अनुसार चले।

जीवन सूत्र

1. संघर्ष और होड़ नहीं सहयोग
2. भोग नहीं संयम। सादा और सरल जीवन।
3. उत्पादक शरीर श्रम जीवन का आधार
4. स्वावलंबन
5. केन्द्रीकरण नहीं विकेन्द्रीकरण
6. कर्तव्य भावना

गांधी–समाज–रचना (लक्ष्य)

जीवन के नैतिक नियम सहयोग, संयम, शरीर श्रम, स्वालंबन, विकेन्द्रीकरण, कर्तव्य भावना सब समाजो पर लागू होते है। इन समस्त नियमों के बिना कोई भी समाज टिक नहीं सकता है। इस तथ्य से समस्त विश्व सहमत है कि आज मानव समाज एक अभूतपूर्व संकट से गुजर रहा है तो वह इसी कारण कि आज की व्यवस्था में समाज–धारण के इन सनातन मूल्यों की अवहेलना की जा रही है। आज के वैश्विक युग में भोग विलास और दूसरों के शोषण को ही जीवन का ध्येय बना लिया है।

1. सबकी सर्वांगीण उन्नति
2. अन्तोदय
3. ट्रस्टीशिप
4. समानता शोषण मुक्त समाज
5. लोकसत्ताः लोकशक्ति
6. विज्ञान और आत्मज्ञान

गांधीवादी दृष्टिकोण इस सिंद्धात को स्वीकार करता है कि व्यक्तियों को लेकर समाज बनता है, इसलिए समाज के सब लोगों की सर्वांगीण उन्नति और कल्याण ही समाज रचना का लक्ष्य हो सकता है। व्यक्ति के नाते समाज के सब व्यक्ति समान है और सबको विकास का समान अवसर मिलना चाहिए।

समाज रचना का लक्ष्य सब लोगों की सर्वांगीण उन्नति है[12]

सर्वांगीण विकास में भौतिक विकास के साथ–साथ नैतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक विकास भी शामिल होना चाहिए।

हम सब अत्यन्त सरलता से इस तथ्य को स्वीकार करते है कि साधन सीमित है इसलिए सम्पूर्ण विश्व का विकास एक साथ नहीं हो सकता। जवाहर लाल नेहरू ने ष्जीमवतल व च्मितबवसंजपवदष रिसन का सिंद्धात के रूप में बौद्धिक प्रतिष्ठा प्रदान की थी। यदि इस सिंद्धात को स्वीकार कर लिया जाये तो भी सामाजिक न्याय का यह तकाजा हैकि जो गरीब या कमजोर है उसको पहले ऊपर उठाना चाहिए।

गरीब और गरीब ना हो और गरीब और अमीर दोनो का विकास एक साथ हो इसलिए गांधीजी ने ''अन्तोदय'' की बात की थी। इस विकास में विकास की दिशा नीचे से ऊपर की ओर जानी चाहिए। गांधीजी का ''अन्तोदय'' प्रासंगिक है। गांधीजी का मानना था कि व्यक्ति को बल, बुद्धि, साधन, संपति, कार्यक्षमता आदि जो भी शक्तियॉ प्राप्त है। उनमें से उसे अधिकांश विरासत में या प्रकृति से प्राप्त होती है। उसने उन सब शक्तियों का उपार्जन नहीं किया हैं इसलिए उसे समस्त शक्तियों व

साधनों का प्रयोग बिना क्षतिपूर्ति किये समाज, परिवार और प्रकृति का ऋण चुकाये बिना नहीं करना चाहिए।

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्तेयज्ञ भाविताः (13)
तैर्दतानप्रदायैभ्यों यो भुड्क्ते स्तेन एवं सः (3.12)

समाज का देश का और समस्त पृथ्वी का ऋण अदा करने का सरल तरीका गांधीजी ने यह बताया है कि मनुष्य को यह जानकर चलना चाहिए कि वह अपनी शक्तियों या साधन संपति का मालिक नहीं है।

वर्तमान में जलवायु परिवर्तन को यदि कम करना व वर्तमान स्थिति में रोकना है तो 'ट्रस्टीशिप' का सिद्धात अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

यदि समाज रचना का लक्ष्य सब लोगों के सर्वांगीण कल्याण का है तो ऐसी समाज–रचना में असमानता का या व्यक्ति या एक व्यक्ति या समूह के द्वारा दूसरे किसी व्यक्ति समूह या देश के शोषण का कोई स्थान नहीं हो सकता हैं समाज व्यवस्था में जनता केवल मूकदर्शक ना रहे। आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक सब क्षेत्रों में सत्ता ओर व्यवस्था के सूत्र जनता के हाथ में और उसके नियंत्रण में आये।

विज्ञान. आत्मज्ञान त्र सर्वोदय

विज्ञान. राजनीति (सतांकाक्षा) त्र सर्वनाश

भौतिक विज्ञान और यंत्र तकनीकी का कुछ सदियों से अभूतपूर्व विकास हुआ है लेकिन इस प्रगति के बावजूद आज पहले की अपेक्षा दुनिया की अधिकांश आबादी गरीबी, अभाव, विषमता, अज्ञान, अकाल, भूखमरी और अनेक प्रकार के रोगों से ग्रस्त है। क्योकि विज्ञान की मदद से अधिक से अधिक वस्तुये कम से कम समय में पैदा की जा रही है। हम विज्ञान और तकनीकी की मदद से रासायनिक प्रक्रियाओं के द्वारा तरह–तरह की नकली चीजे पैदा कर रहे है।

गांधीजी का मानना था कि विज्ञान को नीति और मनुष्य हृदय की उदात्त भावनाओं का सहायक नहीं बनाया जाएगा जब तक करूणा और मानवजाति के लिए उसका उपयोग सीमित नहीं किया जायेगा, तब तक वह मानवजाति के लिए अभिशाप और विनाशकारी ही रहेगा।

विज्ञान के साथ आत्मज्ञान के मिलने पर ही सबका एक साथ उदय अर्थात् विकास संभव है। गांधीजी की धारणा (नीति और विज्ञान) आज भी सहायक है क्योकि उत्तरोतर अप्राकृतिक और कचरे जैसी चीजें खाकर हम कई रोगों को नियंत्रण दे रहे। विज्ञान मनुष्य को संस्कार शून्य बना रहा है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो मनुष्य की मनुष्यता समाप्त हो जायेगी।

'ग्लोबलाइजेशन' नहीं 'लोक्लाइजेशन'

गांधीजी आर्थिक व्यवस्था का विकास ग्रामीण व्यवस्था का अन्त करके नहीं करना चाहते थे। गांधीजी का मानना था कि हर गांव को अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं में आत्म निर्भर होना चाहिए। गांव प्रथम ईकाई है। गांव स्वालम्बी हो और गांव में कोई बेकार न रहे इसलिए प्रत्येक गांव को अपनी आवश्यकताओं के तथा स्थानीय परिस्थिती व उपलब्ध संसाधनों के अनुसार अपनी योजना खुद बनानी चाहिए। गांधीजी का दृष्टिकोण वैश्वीकरण के स्थान पर स्थानीयकरण पर आधारित था। उनका मानना था कि अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों में जो भी कुछ किया जाये, किन्तु लोगों की बुनियादी आवश्यकताओं के मामले में तो अर्थव्यवस्था का 'ग्लोबलाइजेशन' नहीं 'लोक्लाइजेशन' (स्थानीयकरण) होना चाहिए।

वैश्वीकरण के कारण प्राकृतिक सम्पदा का शोषण और पर्यावरण का विनाश हुआ है। इस वैश्वीकरण का उपाय एक मात्र ''गांव प्रथम ईकाई'' ही हो सकता है।

प्राकृतिक संसाधन व पर्यावरण – गांधी एवं पर्यावरण

पिछली पूरी शताब्दी हिंसा और शोषण की शताब्दी थी। हिरोशिमा और नागासाकी पर बम गिराये गये। दो विश्व युद्धों के अलावा रोज–रोज होने वाले शीत युद्धों के कारण संसार दहल गया।

''शोषण'' सबका बीजमंत्र बन गया।

"Exploit The Nature"

प्रकृति का शोषण करके अपने सुख संपत्ति को बढ़ाना ही मानव का ध्येय हो गया। भौतिक विकास की इस दौड़ के कारण ही सम्पूर्ण प्राकृतिक संतुलन गड़बड़ा गया।

आखिर विकास का अर्थ क्या है? विकास का आखिर चरण क्या है? विकास के संदर्भ में महात्मा गांधीजी ने एक ऐतिहासिक सूत्र दिया। ''मैं आपको एक सूत्र या टोटका देता हूँ। जब–जब आप संशय या भ्रम में पड़े या जब आप स्वार्थ से गृसित हो जाये, तब आप आगे बतलाया हुआ उपाय करके देखिये। अपने सम्मुख आये हुए किसी अत्यन्त दरिद्र असहाय व्यक्ति का चेहरा आंखों के सामने लाईये। आपने जो करने की योजना बनाई है, उसका उस व्यक्ति को कोई लाभ या उपयोग होगा क्या? ऐसा प्रश्न स्वयं से कीजिये''[14]

यही प्रश्न प्रगति और विकास का वास्तविक मापक है। गांधीजी ने पर्यावरण की रक्षा के लिए ही ''खादी'' को सर्वोतम कपड़े और भारतीय वस्त्र के रूप में प्रसिद्ध किया। गांधीजी ने स्वयं स्वीकार किया था कि खादी के निर्माण में अन्य वस्त्रों के उत्पादन की तुलना में बहुत कम पानी लगता है। खादी ''पोरस'' तथा ''इकॉलोजिकली'' मैत्रीपूर्ण (इकोफ्रेंडली) होने के कारण स्वास्थ्यपूर्ण वस्त्र है। आज ''खादी'' को भारतीय वस्त्र का दर्जा दिया जाये तो पर्यावरण का अधिकतम जल बचाया जा सकता है। किन्तु ''पूंजीवादी'' लोक भक्षक लोग नहीं करना चाहते है।

''सर्वोदय दर्शन'' नामक पुस्तक में आचार्य दादा धर्माधिकारी ने कहां है कि ''जीवन का डायनेमिक्स ही स्नेह है।'' यही प्रगति का तत्व है।

चिन्तामणराव देखमुख ने भी लोकसभा में स्वीकार किया था ''जोंक से बाघ ज्यादा अच्छा है।''

भारतीय संवधिान की धारा–21 में भारतीय नागरिक को 'जीने का' जो मूलभूत अधिकार दिया गया है उसी में 'पर्यावरण संरक्षण अंतर्निहीत है।' ऐसा भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने घोषित किया है। जीने का अधिकार किसी भी तरह जीने तक मर्यादित नहीं है बल्कि इस अधिकार में मानवोचित प्रतिष्ठापूर्वक जीने का अधिकार उसमें निहित है। प्रतिष्ठापूर्वक जीवन में शुद्ध और स्वस्थ पर्यावरण का मूलभूत अधिकार भी शामिल है।

गांधीजी का मानना था कि प्रत्येक अधिकार का जन्म कर्तव्य की कोख से होता है। इसलिए दूसरों को भी इस अधिकार का उपभोग करना संभव हो, इसलिए हर एक को अपने अधिकार का उपयोग इसमें अभिप्रेत कर्तव्य का मान रखकर करना होगा।

"Your Liberty of swing your hand ends
Where tip of my nose begines."

वर्तमान समय में यदि हम गांधीजी उपरोक्त धारणा को स्वीकार कर ले तो अधिकार और कर्तव्य के मध्य के संघर्ष को समाप्त किया जा सकता है।

अत्यधिक लोभ, स्वार्थ भावना या आत्म केन्द्रीकरण को जागतिक स्तर पर कोई स्थान नहीं है। इसलिए गांधीजी ने समान–वितरण की कल्पना प्रस्तुत की। मनुष्य का जीवन छममक ठेंमक अर्थात जरूरतों पर आधारित होना चाहिए।

Greed Based अर्थात् लोभ पर आधारित ना हो।

लूथरकिंग ने कहां है "There is Nothing in our glittering Technology which can raise an man to new hights because material growth in itself has been made an end. In the abesence of moral purpose, man himself becomes smaller as the work of man becomes bigger."

महात्मा गांधी ने 7 सामाजिक पापों का उल्लेख किया है:–

1. परिश्रम–रहित धनार्जन
2. सदाचार–रहित व्यापार
3. चारित्र्य–रहित ज्ञान
4. विवेक–रहित सुख
5. संवेदना–रहित विज्ञान
6. वैराम्यविहीन उपासना
7. सिद्धान्त रहित राजनीति

प्रकृति और पर्यावरण के संदर्भ में गांधीजी ''स्वदेशी वृति'' के समर्थक थे। स्वदेशी केवल मात्र एक वस्तु से संबंधित नहीं बल्कि यह एक भावना है। इसलिए विश्वस्त–भावना को परम–मूल्य माना गया है। विज्ञान का संबंध आध्यात्म से व संवेदनशीलता से अनुबंधित होना चाहिए।

गांधीजी के अनुसार पर्यावरण और जलवायु के संदर्भ में भारत की एक विशिष्ट भूमिका थी। भारतीय परिवेश में सभी क्षेत्रों में जितनी विषमतायें है, उतनी विषमतायें दुनिया में और कहीं नहीं है।

प्रसिद्ध विचारक ''बर्ट्रेण्ड रसेल'' ने कहां था कि ''आज उनके प्रकार के कलहों के अस्तित्व में मनुष्य और प्रकृति के बीच का कलह निरन्तर बढ़ रहा है। भौतिक विज्ञान की अविवेकपूर्ण प्रगति के कारण ही यह कलह बढ़ रहा है।''[15]

वर्तमान वैश्विक स्वर पर यह कलह सबसे बडी समस्या है। इसका निराकरण करना है तो प्रकृति को मानव को मोहित करने वाली मायाविनी न समझा जाये और न ही वह भोग्य वस्तु बने बल्कि वह उसकी प्रियसखी व सहयोगिनी बने। गांधीवादी दृष्टिकोण प्रकृति को पुजनीय स्वीकार करता है।

विनोवाजी ने ''गीता प्रवचन'' पुस्तक में कहां था कि ''गाय की सेवा करने से पर्याप्त दूध देने वाले, किन्तु मानव जाति से निम्न श्रेणी के पशु सृष्टि के साथ भी हमारा प्रेम–संबंध होता है। विनोबा भावे ने इस तथ्य को भी स्वीकार किया है कि प्रभु ने एक भी वस्तु अनुपयोगी नहीं रची है। इन वस्तुओं का कुछ ना कुछ उपयोग सृष्टि के पर्यावरण संतुलन बनाये रखने में होता है''[15] वर्तमान में भी यदि पर्यावरण संतुलन पर दृष्टिपात करे तो हम पाते है कि जल, वायु, अग्नि, आसमान व मानव सब एक दूसरे के पूरक है। गांधीवादी दृष्टिकोण भी इसी तथ्य को स्वीकार करता है। प्रकृति को यदि सखी रूप में स्वीकार कर लिया जाये तो वृक्षों की संख्या में कमी नहीं होगी। कार्बन डाइ ऑक्साइड का उत्सर्जन अवशोषण भी संतुलित हो जायेगा।

गांधीजी को सृष्टि का शोषण मान्य नहीं था। यद्यपि यह 22वीं सदी का समय है लेकिन आज भी हम आवश्यकताओं पर आधारित जीवन जीकर पर्यावरण को बचा सकते है।

प्रकृति व खादी

गांधीजी ने स्वीकार किया है कि खादी केवल मात्र एक वस्त नहीं है। खादी पर्यावरण व जलवायु की दृष्टि से श्रेष्ठ वस्त्र व विचार है। एक कारखाने से तैयार कपड़े के निर्माण में जितना पानी लगता है उससे आधे से कम पानी में खादी का उत्पादन किया जा सकता है यदि गांधीजी के अनुसार गृहोद्योग और ग्रामोद्योग को प्रारम्भ किया जाये तो पर्यावरण व जलवायु को सुरक्षित रखा जा सकता है।

गृहोद्योग और ग्रामोद्योग के माध्यम से हम दरिद्रता, भुखमरी, बेकारी की समस्या हल करने में मदद मिलेगी। पर्यावरण व जलवायु को प्रदूषित करने वाली उद्योगों से भी हमें मुक्ति मिल सकती है।

पंचमहाभूत और गांधीवादी दृष्टिकोण

महात्मा गांधी को प्रकृति से विलक्षण प्रेम और स्नेह था। ''पंचमहाभूत'' पर उनका अप्रतिम प्रेम था। उनका मानव जीवन पंचमहाभूत पर आधारित था। हवा, पानी, सूर्य, पृथ्वी, आकाश इन तत्वों में संतुलन सबसे आवश्यक हे। ये पंचमहाभूत तत्व हमें ईश्वर से प्राप्त है लेकिन इनका सदुपयोग ही इनकी बचत है।

गांधी विचार–यंत्र

हाथ की शक्ति बढ़ाने के लिए ''हथौड़ा'' अवश्य चाहिए परन्तु ''हाथ'' फाटकर उसकी जगह हथौड़ा चिपकाया जायेगा तो वह ''मानवद्रोह'' ही होगा। वर्तमान विश्व की स्थिति कुछ ऐसी हो गई है।

''यहां पर पर्याप्त मानवता है, लेकिन खाने के लिए भरपेट नहीं है'' पर्याप्त श्रम है, परन्तु उसका उचित पारिश्रमिक नहीं है।''

प्रकृति से पारिवारिक संबंधः–एक मात्र जलवायु के संरक्षण का मार्ग

हम लोग पृथ्वी को ''वसुन्धरा या वसुमती'' कहते है। ''वसु'' शब्द का तात्पर्य सम्पति है। सारी सम्पति पृथ्वी के गर्भ में समाहित है, यह हमारी भावना है। वर्तमान में प्रदूषण, जंगल में कमी, ग्रीन हाऊस गैस उत्सर्जन की समस्या, औजोन परत में छेद, पृथ्वी के तापमान में वृद्धि आदि समस्यायें इसलिए हमारे समक्ष आई है क्योकि आज

प्रकृति को हमने मात्र साधन व दुश्मन समझकर उस पर विजय प्राप्त करेन की आंकाक्षा दिखाई देती है।

गांधी का जीवन त्याग की भावना पर आधारित था। यदि हम वर्तमान में गांधी के दृष्टिकोण को स्वीकार कर ले तो प्रकृति हमारी मित्र बन जाये न कि शत्रु। प्रकृति के साथ सहयोग करके ''सहजीवन'' स्थापित करने की बजाय प्राकृतिक सम्पदा का शोषण करने की प्रवृति निरन्तर बढ़ रही है।

भारतीय संविधान की धारा के अन्तर्गत यह संकल्प किया गया है कि राज्य विशेष रूप में गाय एवं बछड़े व अन्य दुधारू व जोताई में काम आने वाले प्राणियों की रक्षा करेगा और उनकी स्थितियों में सुधार करेगा। उनके कत्ल या हत्या को रोकने का समुचित उपाय करेगा। भारतीय संविधान भी जंगल, सरोवर, नदी व अन्य जीव सृष्टि तथा प्राकृतिक पर्यावरण का रक्षण करके उनमें सुधार करना व सजीव प्राणियों के प्रति दयाभाव रखने पर बल देता है। ''प्रकृति में सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता है, परन्तु उसमें एक भी व्यक्ति की ''लोभपिपासा'' पूर्ण करने की क्षमता नहीं है।''

''न कोई प्रजा है, न कोई तंत्र है
यह आदमी के खिलाफ, आदमी का खुलासा षड्यंत्र है।''

"Man is the Measure of every thing." यदि इस भावना को स्वीकार कर लिया जाये तो विकास मात्र मानवीय होगा।

निष्कर्ष

जब तक मनुष्य के हृदय में जीवन के प्रति उसके रूख में परिवर्तन नहीं हो जाता है, तब तक केवल बाहरी परिस्थिती को बदल देने भर से काम नहीं चलता। जब तक इंसान खुद नहीं बदलेगा तब तक समाज नहीं बदल सकता। पहले स्वयं व्यक्ति को अपने जीवन में उन मूल्यों को उतारना होगा, और मूल्यों के अनुसार जीवन को ढ़ालना होगा। व्यक्ति और समाज के हितों में परस्पर विरोध नहीं है, बल्कि दोनो एक दूसरें के पूरक है दोनो एक ही है। समाज और पर्यावरण के प्रति हमारे कुछ कर्तव्य है उनका पालन करने पर ही समाज ठीक से चल सकता है। सृष्टि केवल मात्र हमारे उपभागे के लिए नहीं बनी है। हम उस सृष्टि के मालिक नहीं उसके अंग है। इस सृष्टि की हर चीज एक दूसरे से संबंधित है और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से परस्पर अवलंबित है। सृष्टि या प्रकृति नियम से चलती है, उसमें स्वछन्दता का कोई स्थान नहीं है। अतः प्रकृति के नियमों को समझकर जीवन की रचना उनके अनुसार करनी चाहिए। समाज संघर्ष या होड से नहीं, परस्पर सहयोग से चलता है। ''वर्तमान में गांधीवादी पर्यावरणीय समझ अत्यन्त प्रासंगिक है।''

संदर्भ सूची

1. *एस.के.औझा पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण पृष्ठ संख्या(9)*
2. *Research Icon, Vol I, No.3 October 2015-January 2016 ISSN - 2395.6585 पृष्ठ संख्या–(240)*
3. *एस.के. ओझा पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण पृष्ठ संख्या–(14)*
4. *एस.के. ओझा ''पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण'' पृष्ठ संख्या–(11)*
5. *संपादक एन.एन. ओझा ''क्रानिकल विशेषांक'' अन्तराष्ट्रीय संबंध और कूटनीति नवम्बर 2015 पृष्ठ संख्या–(15)*
6. *संपादक एन.एन. ओझा ''क्रानिकल विशेषांक'' अन्तराष्ट्रीय संबंध और कूटनीति नवम्बर 2015 पृष्ठ संख्या–(98)*
7. *संपादक ''डॉ0 अनुप कुमार'' Research Icon A Multdisciplinary Quarterly Research Journal Vol.1 No.-3 Octorber-15 Jan, 2016*
8. *लेखक शंकर लाल लामरोड़ ''हरित क्रांति एवं जलवायु मुद्दे''*
9. *एस.के. ओझा ''पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण'' पृष्ठ संख्या (213)*
10. *संपादक–डॉ0 अनूप कुमार ष्त्मेमंतबी ष्बवदष त्मेमंतबी श्रवनतदंस टवसण्1 छवण्.3 ब्बजवतइमत.15 श्रंदए 2016 मोहम्मद इमराव ''वैश्वीकरण'' पृष्ठ संख्या–(471)*
11. *''लेखक सिद्धराज ढड़ढा'' वैकल्पिक समाज–रचना रूपरेखा कार्यक्रम, पृष्ठ संख्या–(11)*
12. *सिद्धराज ढड़डा ''वैकल्पिक समाज–रचना'' पृष्ठ संख्या–(21)*
13. *सिद्धराज ढड़ढा 'वैकल्पिक समाज–रचना' पृष्ठ संख्या–(23)*
14. *न्यायमूर्ति श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी गांधी–विचार और पर्यावरण, पृष्ठ संख्या–(05)*
15. *लेखक न्यायाधीश चन्द्रशेखर धर्माधिकारी गांधी–विचार और पर्यावरण, पृष्ठ संख्या–(13)*
16. *लेखक न्यायाधीश चन्द्रशेखर धर्माधिकारी गांधी–विचार और पर्यावरण, पृष्ठ संख्या–(13)*